P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अनूसूचित जातियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर सामाजिक आर्थिक पृष्ठ भूमि का प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुशील कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
शिवपति पी0जी0 कालेज,
शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर

सारांश

शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के सबसे उपर्युक्त साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षा के द्वारा सार्वभौमिक ज्ञान का विकास तथा कुशलता प्राप्त की जाती है। शिक्षा मानव के लिए प्रगति के अवसर प्राप्त करने में, समाज में समायोजन एवं अनुकूलन करने में एवं परिवर्तन को स्वीकार करने में सहायक है। शिक्षा के द्वारा राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों को सीखने एवं उनमें भागीदारी करने में सहायता प्राप्त होती है। अतः शिक्षा मानव के सततः विकास का सबसे उपर्युक्त माध्यम है, जिसमें सर्वांगीण विकास सम्भव है। यदि दो सौ साल तक योजना को सफल बनाना है तो लोगों को शिक्षित करना होगा क्योंकि आप लोगों को पढ़ायेंगे तो आप हजारों शिक्षित पीढ़ियाँ पायेंगे। (551–479ई0पू0) कुआन त्सू।

शिक्षा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'एडयूकेटर' से हुई है, जिसका अर्थ हे मनुष्य अथवा बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह का विकास करना है। व्यापक अर्थ में शिक्षा एक सामूहिक प्रक्रिया है। नाईजीरिया के शिक्षाशास्त्री अदेरमी आलू तोला (1981) ने कहा था कि शिक्षा समाजीकरण, बदलाव एवं नवीनता लाने की प्रक्रिया है यह सामाजिक मूल्यों का संरक्षण एवं उनके प्रसार का तरीका है यह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त व्यक्ति के समग्र विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध सामाजिक ढांचे, जीवन विधि और तौर–तरीकों, विचार–आचरण और व्यक्ति के व्यक्तित्व की संरचना से है।

मुख्य शब्द : राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक

प्रस्तावना

शिक्षा एक मात्र ऐसा महत्वपूर्ण साधन है जिसके द्वारा सुयोग्य व्यक्ति चाहे उसके संसाधन कुछ भी हों, सामाजिक पदक्रम दूसरे वर्ग एक पद से दूसरे पद तक ऊपर उठ सकता है। शिक्षा के माध्यम से मूल्यों, आदर्शों आस्थाओं, परम्पराओं, रीति–रिवाजों, कौशल एवं तकनीकी सहित समूची संस्कृति में परिवर्तन आता है।

अतः शिक्षा भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में सर्वांगीण विकास के सबसे महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार की गई है। इसी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका भारतीय परिप्रेक्ष्य में दलित–वर्ग के विकास में भी रही है। दलित जातियाँ सामाजिक रूप से निम्न आर्थिक रूप से पिछड़ों, शैक्षिक अधिकार से वंचित, मानसिक रूप से निराश तथा न्यायायिक रूप से शोषित रही है। सभी क्षेत्रों में विकास के लिए भारतीय संविधान और सरकार द्वारा प्रयास किये गये है। स्वतन्त्रता के पश्चात् सरकार द्वारा अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास के लिए असंख्य प्रयास किये गये हैं। जिनमें प्रवेश में आरक्षण, छात्रावास सुविधा एवं छात्रवृत्ति आदि शामिल हैं। इन प्रयासों के पश्चात् भी समाजशास्त्रियों ने पाया कि अनुसूचित जातियों की शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य जातियों की तुलना में कम पायी गयी है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध में यह प्रयास किया गया है कि ऐसे कौन–कौन से कारण हैं कि जिनसे अनुसूचित जातियों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

भारत में अनुसूचित जातियों की शैक्षिक स्थिति का पार्श्वचित्र

भारत सम्पूर्ण विश्व में सबसे वृहत लोकतन्त्र है लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए देश की महिलाएं एवं पुरूषों में गुणात्मक विकास का होना अति आवश्यक है। परन्तु जब तक लोकतन्त्र अर्थहीन है जब तक उसकी जनता अधिक्षित है अथवा अशिक्षितों की संख्या बहुत अधिक हैं। यद्यपि आधुनिक भारत एवं राज्य जाति की समस्या का निराकरण करने के लिए प्रयासरत् है। परन्तु

यह प्रयास असफल हो रहा है, क्योंकि आधुनिक शिक्षा तक दलितों की पहुँच एवं दूरी बनी हुई है। अनुसूचित जातियों की 80 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे एवं गाँव में निवास करती है कुल मजदूरों में से 66 प्रतिशत अनुसूचित जातियों के सदस्यों में से है। 55.27 प्रतिशत अनुसूचित जातियों के लोग कृषि मजदूरी का कार्य करते हैं और 23.62 प्रतिशत अनुसूचित जाति के लोग खेती कार्य करते हैं। इनमें से अधिकतम कृषक जाति के लोग ही फैक्ट्रियों में व दूसरे कार्यों में लगे हैं। केवल 17.59 प्रतिशत अनुसूचित जाति के लोग ही रोजगार, सरकारी संगठनों एवं फैक्ट्रियों में कार्य करते हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार की जनसंख्या 1.252 बिलियन (2013) 100 करोड़ से अधिक हो गई है। इनमें से अधिकतम अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के लोग अशिक्षित हैं। दलित शिक्षा आन्दोलन नामक एक शैक्षिक संगठन ने 'दलित डाटा बैंक' के नाम से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंनं बताया कि सरकार द्वारा चलायी गयी कल्याणकारी योजनाएं नौकरी तथा शैक्षिक संस्थानों में आरक्षण की सुविधा आदि भी देश के सभी लोगों तक प्राइमरी शिक्षा प्रदान नहीं कर पाये, क्योंकि आज भी देश की 48 प्रतिशत जनसंख्या अशिक्षित है। इनमें भी महलाओं की 76 प्रतिशत जनसंख्या अशिक्षित है।

भारत सरकार के कल्याण मंत्रालय की एक रिपोर्ट 2011 में प्रकाशित हुई, जिसमें नवीनतम अनुसूचित जातियों एवं अन्य समुदायों का शैक्षिक सारणी प्रकाशित की इनमें सामान्य जाति के पुरूषों की शैक्षिक स्थिति 82. 14 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जातियों के पुरूषों में शैक्षिक स्तर 73.0 प्रतिशत तक है। जबकि महिलाओं में सामान्य जाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति 65.46 प्रतिशत तक शिक्षित हैं, जबकि अनुसूचित जातियों की महिलाएँ 52.1 प्रतिशत ही शिक्षित हैं। यदि हम सामान्य जाति के महिला एवं पुरूषों का शैक्षिक स्तर देखते हैं तो वह 74.04 प्रतिशत तक पहुँच जाता है, जबकि अनुसूचित जातियों में महिलाओं एवं पुरूषों को मिलाकर 62.8 प्रतिशत लोग ही शिक्षित हैं।

अनुसूचित जातियों की लिंगीय साक्षरता दर

भारत	साक्षरता	अनुसूचित जाति
पुरूष	82.14	73.0
महिला	65.46	52.1
कुल	**74.04**	**62.8**

स्रोत–कलयाण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, (रिपोर्ट पब्लिशड) मार्च–1998

साक्षरता दर (अनुसूचित जातियाँ)

वर्ष– 2011	प्रतिशत 62.8
2001	54.69
1991	37.41
1961	10.27
1951	1.9

स्रोत–कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली। रिपोर्ट प्रकाशित मार्च–1998 सन् 1931 में अनुसूचित जातियों की कुल जनसंख्या की 1.9 प्रतिशत ही शिक्षित थी। जो 1961 तक आते–आते 10.27 प्रतिशत तक हो गयी। दूसरे शब्दों में अनुसूचित जातियों में शैक्षिक वृद्धि 8.37 प्रतिशत प्रथम तीस सालों में हुई। जबकि 1991 तक अनुसूचित जातियों की शैक्षिक जनसंख्या 37.41 प्रतिशत तक पहुँच गई। इसका अर्थ यह है कि स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् पिछले 30 सालों में शिक्षित जनसंख्या में वृद्धि हुई। सन 2001 में अनुसूचित जातियों का साक्षरता दर 54.69 प्रतिशत है तथा 2011 में इनकी साक्षरता दर 62.8 प्रतिशत तक पहुंच गयी है। (स्रोत–कल्याण मंत्रालय, भारत नई दिल्ली, रिपोर्ट)

भारत में अनुसूचित जातियों की शिक्षा की स्थिति

भारत में आधुनिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा कि व्यवस्था द्विपक्षीय रही है। उच्च स्तरीय अंग्रेजी माध्यम के स्कूल हमेशा उच्च जातियों, धनी एवं शक्तिशाली लोगों के प्रभुत्व में रहे हैं। ये संस्थाएँ राजनीतिज्ञों, व्यवसायियों, व्यापारियों तथा नौकरशाहों एवं समाज के उच्च स्तर के लोगों के बच्चों के लिए आरक्षित रहे हैं। ये सभी संस्थाएँ अत्यधिक उच्चतम स्तर की रही हैं। जैसे– जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान, पिलानी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भारतीय प्रबन्धन संस्थान, आदि का स्तर अत्यधिक ऊँचा है। जो छात्र अंग्रेंजी माध्यम से नहीं आते हैं वे इन संस्थाओं में अपनी डिग्री पूर्ण करने में अक्षम रहे हैं कमजोर आर्थिक परिस्थितियों वाले एवं दलित अभिभावक अपने बच्चों को इन संस्थाओं में प्रवेश लेना एवं उनमें पाठ्यक्रम पूर्ण करना एक सपने के जैसा है।

दूसरी और अशिक्षित एवं निरक्षर दलित अभिभावक अपने बच्चों को शैक्षिक व्यवस्था के अनुरूप संस्कृति एवं वातावरण नहीं दे पाते हैं जबकि अभिजन अपने बच्चों को उच्च स्तरीय अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश दिलाते हैं और इनकी संस्कृति भी शिक्षा प्राप्त करने में सहयोगी होती है। अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राएं अधिकतर ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करते हैं। जहाँ पर शिक्षक एवं स्कूली व्यवस्था तथा वातावरण बहुत पिछड़ा होता है। इसलिए अनुसूचित जातियों के जो छात्र/छात्राएँ उच्च शिक्षा ग्रहण करने की आकांक्षा रखते हैं। वे सामान्यतः बी0ए0, बी0एस0सी0, बी0कॉम0, पाठ्यक्रम में भाग लेते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 2002–03 की रिपोर्ट के अनुसार।

शोध समस्या का चयन

शोध प्रक्रिया में समस्या का चयन सूत्रीकरण का प्रथम चरण होता है। शोधकर्ता को समस्या के प्रति सचेत रहना होता है और समस्या के प्रति जागरूकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का लक्षण है। शोध समस्या समाधान हेतु प्रश्नों का निर्माण किया जाता है, जिनके उत्तर शोधकर्ता को प्राप्त करने होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में अनुसूचित जातियों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले सामाजिक आर्थिक प्रभाव का अध्ययन किया गया है क्योंकि सामाजिक आर्थिक कारक और छात्र छात्राओं की निष्पत्ति में महत्वपूर्ण सम्बन्ध हैं (चोपड़ा 1967) अभिभावकों की शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक आय, मकानों के प्रकार, घर का सांस्कृतिक स्तर जहाँ उच्च स्तरीय व गुणात्मक पायी गयी, उन बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से श्रेष्ठ पायी गयी। (कुपन्ना 1981, गंगराडे 1979, एमएस

दुबे 1974) ग्रामीण छात्र–छात्राओं की तुलना में शहरी पृष्ठभूमि के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि सकारात्मक है (सिंह 1979) उच्च समुदाय के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च पायी गयी है, जबकि निम्न समुदाय के छात्र/छात्राओं की उपलब्धि निम्न पायी गयी (कुमार 1973), छात्र/छात्राओं की आवश्यकताओं, रूचियों तथा अभिप्रेरणा का निष्पत्ति पर अत्याधिक प्रभाव पड़ता है। (दास.आर. 1989), लोहइतकसाम (1961), चोपड़ा (1969), सब्रमणयम (1980) परमाजी (1985), कुपन्ना (1981), ललिता (1980), गंगराडे (1973), परमाजी एवं राव (1985), कुप्पुस्वामी (1964) ने अपने अध्ययनों में पाया कि जातियां शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि जातियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में बाधायें एवं अभिप्रेरणा के तत्व पाये जाते हैं। निम्न जातियों की भूमिका बाधा के रूप में पायी जाती है, जबकि उच्च जातियों की भूमिका शिक्षा के क्षेत्र में अभिप्रेरणा का कार्य करती है।

परमाजी एवं राव (1985), चौपड़ा (1967), सुब्रमणयम (1984), गुप्ता (1987), फैर्यसन (1971), वाइजमैन (1982), नायर (1972), दास एवं दास (1980) ने अपने अध्ययन में पाया कि जातियों का आर्थिक, सामाजिक स्थिति से घनिष्ट सम्बन्ध है। उच्च जातियों के पास उच्च आर्थिक स्रोत पाये गये व निम्न जातियों के पास निम्न आर्थिक स्रोत पाये गये।

शाह (1965), सिंह (1979), ऐरन (1969), पासी (1972), जैन (1981) नें पाया कि अधिकतम अनुसूचित जातियाँ ग्रामीण अंचलों में निवास करती हैं।

रमैया (1998), अग्रवाल (2002), जोहन एवं मैकमिलन (1973), बिन्दु (1975), त्रिपाठी (1983), ग्लोब एवं हाल (1988), धीर (1988), भारद्वाज (1995) ने पाया कि आर्थिक परिस्थिति का प्रभाव छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि पर होता है उच्च आर्थिक स्थिति के छात्र/छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि निम्न आर्थिक स्थिति वाले छात्रों से श्रेष्ठ पायी गयी।

उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि अनूसूचित जातियों के छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि औसत रूप से सामान्य जातियों के छात्र–छात्राओं से कम पायी जाती हैं, क्योंकि निम्न जातियों के छात्र–छात्राओं को समुचित शैक्षिक सुविधायें, शिक्षण, सामग्री व उचित शैक्षणिक वातावरण नहीं मिल पाया। इन जातियों के छात्र आर्थिक रूप से कमजोर, शैक्षिक रूप से पिछड़े सामाजिक रूप से भेदभाव का शिकार तथा सांस्कृतिक रूप से हतोत्साहित पाये जाते हैं। जिसका प्रभाव इनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर भी पड़ता है। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

शोध समस्या के समाधान हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है।

1. अनुसूचित जातियों के छात्रों की सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जातियों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों का मुल्यांकन करना।
3. अनुसूचित जातियों के छात्रों के शैक्षणिक विकास में बाधक कारको की खोज करना।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सिद्धार्थनगर जनपद के महाविद्यालयों को अध्ययन क्षेत्र हेतु चयनित किया गया है।

अध्ययन का समग्री

प्रस्तुत शोध हेतु सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित दस प्रमुख महाविद्यालयों समग्र के रूप में चुना गया है, जिसमें अनुसूचित जातियों के छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया गया है।

1. शिवपति पी0जी0 कालेज, शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर।
2. राजा रतन सेन पी0जी0 कालेज बांसी, सिद्धार्थनगर।
3. बुद्ध विद्या पीठ डिग्री कालेज सिद्धार्थनगर।
4. बुद्ध बालिका डिग्री कालेज गौतमपल्ली, सिद्धार्थनगर।
5. आजाद महाविद्यालय करौंदा मसिना, सिद्धार्थनगर।
6. सिद्धार्थ महाविद्यालय बर्डपुर, सिद्धार्थनगर।
7. चौधरी महावीर प्रसाद महाविद्यालय हथियहवां, सिद्धार्थनगर।
8. गौकरण सिंह महाविद्यालय चिल्हियां, सिद्धार्थनगर।
9. रामअधारे चौरसिया महाविद्यालय उस्का, सिद्धार्थनगर।
10. मूरति देवी महाविद्यालय पकड़ी, सिद्धार्थनगर।

अध्ययन की इकाई

सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जातियों के छात्र–छात्राओं को अध्ययन की इकाई के रूप में चयन किया गया।

देव निदर्शन

चयनित प्रत्येक महाविद्यालयों से तीस उत्तरदाताओं का चयन स्तरीकरत निदर्शन द्वारा सभी विषयों में अध्ययनरत अनुसूचित जातियों के छात्र–छात्राओं की कुल संख्या से 300 छात्र/छात्राओं का चयन शोध हेतु किया गया।

तथ्य एकत्र करने की प्रविधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक तथ्य एकत्र करने के लिए साक्षात्कार अनुसूचित का प्रयोग किया गया जिसमें सिद्धार्थनगर जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के 300 छात्र/छात्राओं को उत्तरदाता के रूप में चुना गया।

शोध के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से सारणीयन एवं विश्लेषण के पश्चात् जो शोध के निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं वे क्रमशः इस प्रकार हैं–

1. चयनित शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् सर्वाधिक अनुसूचित जातियों के छात्र 68 प्रतिशत की आयु का स्तर 20 से 25 वर्ष के बीच पाया गया है।

2. चयनित संस्थानों में सभी छात्र/छात्राओं का प्रवेश आरक्षित सीटों पर ही हुआ है।
3. अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्रों में महिलाओं की अपेक्षा पुरूष छात्रों की संख्या अधिक पायी गयी है, इनमें पुरूष छात्र 75 प्रतिशत, व महिला छात्राएं 25 प्रतिशत पाये गये हैं, इससे स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जातियों में लिंग सम्बन्धी असमानता व्याप्त है।
4. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र 90 प्रतिशत अविवाहित पाये गये क्योकि शादी के बाद इन जातियों के सदस्यों को शिक्षा जारी रखने में परेशानी रहती है।
5. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं की गतवर्ष शैक्षणिक उपलब्धियों में मात्र 2 प्रतिशत छात्र ही विशिष्ठ श्रेणी प्राप्त है, 22 प्रतिशत प्रथम श्रेणी प्राप्त है तथा सर्वाधिक 56 प्रतिशत छात्र द्वितीय एवं 20 प्रतिशत तृतीय श्रेणी प्राप्त है, जिसका प्रमुख कारण शिक्षा ग्रहण करने में आने वाली आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक बाधाएं हैं।
6. चयनित शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं में सर्वाधिक 43 प्रतिशत छात्र मध्यम श्रेणी शिक्षा प्राप्त है, 33 प्रतिशत तृतीय श्रेणी शिक्षा और मात्र 24 प्रतिशत छात्र ही ऐसे हैं जो प्रारम्भ से अंत तक उच्च श्रेणी शिक्षा प्राप्त है।
7. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं के परिवार सर्वाधिक 85 प्रतिशत 7 से 9 सदस्य संख्या वाले पाये गये हैं, जबकि संयुक्त परिवार 10 से 12 सदस्य सबसे कम 2 प्रतिशत पाये गये हैं, क्योंकि आर्थिक कमजोरी, रोजगार की कमी व आवास समस्या के कारण ज्यादातर एकल परिवार पाये गये।
8. अनुसूचित जातियों के अधिकतर छात्र/छात्राएं 68 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों से आये हैं।
9. अनुसूचित जाति के छात्रों के माता–पिता 27 प्रतिशत मजदूरी से जुड़े हुए हैं। शेष छात्र/छात्राओं के माता–पिता सरकारी–नौकरी, ट्रेडर्स तथा व्यवसायों से जुड़े हुए हैं।
10. 32 प्रतिशत छात्र/छात्राओं के माता–पिता की आय मध्यम वर्ग से, 41 प्रतिशत निम्न आय वर्ग से तथा 27 प्रतिशत अति निम्न आय वर्ग से आते हैं।
11. चयनित अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं के माता–पिता की मासिक आय के विवरण में 32 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को शिक्षा ग्रहण करने में आर्थिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ रहा है तथा शेष 68 प्रतिशत बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है।
12. शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन करने वाले छात्र/छात्राओं के अभिभावकों में अधिकतम 60 प्रतिशत अशिक्षित अथवा निरक्षर पाये गये। 15 प्रतिशत शिक्षित व 25 प्रतिशत जूनियर तक शिक्षा प्राप्त पाये गये।
13. शिक्षण संस्थनों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियें के 69 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया कि उन्हें समाज में औसत रूप से सम्मान प्राप्त है, जबकि 31 प्रतिशत ने स्पष्ट किया है कि समाज में उन्हें बहुत कम अथवा आंशिक रूप से सम्मान दिया जाता है।
14. शोध हेतु चयनित शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के 22 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने बताया कि वे सामाजिक कार्यों में पूर्ण रूप से भागीदारी करते हैं।
15. अनुसूचित जातियों के 70 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया है कि वे अन्य जातियों के प्रति श्रेष्ठता की भावना रखते हैं तथा 30 प्रतिशत ने स्वीकार किया कि वे आंशिक रूप से अथवा बहुत कम अन्य जातियों के प्रति श्रेष्ठता की भावना स्वीकार करते हैं।
16. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं में 31 प्रतिशत उच्च जातियों के साथ मधुर सम्बन्धों को स्वीकारा और 66 प्रतिशत ने सामान्य सम्बन्धों को स्वीकारा तथा 3 प्रतिशत ने स्पष्ट किया कि उच्च जातियों के लोगों के साथ उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं, क्योंकि उच्च जाति के लोग उनको निम्नजाति के मानते हुए भेदभाव करते हैं।
17. अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं में 13 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया कि उच्च जातियों के छात्र उनके साथ भेदभाव–पूर्ण व्यवहार करते हैं। 64 प्रशित ने केवल कुछ परिस्थितियों में भेदभाव को स्वीकारा तथा 23 प्रतिशत ने भेदभाव–पूर्ण व्यवहार स्वीकार नहीं किया है।
18. शोध हेतु चयनित अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं में 94 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया है कि वे धार्मिक कार्यों व त्यौहारों में किसी न किसी रूप में सहभागिता रखते हैं, जबकि 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सहभागिता का स्तर बेहद कम बताया।
19. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के छात्र/छात्राओं में 57 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने चुनाव के अवसर पर, 10 प्रतिशत ने त्यौहारों अवसर पर तथा 33 प्रतिशत ने विवाह के अवसर पर अन्य जातियों के साथ सहभागिता को स्वीकार किया है।
20. अनुसूचित जातियों के 44 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यों में सहभागिता को स्वीकार किया है तथा 56 प्रतिशत ने सहभागिता का स्तर बहुत ही कम स्वीकार किया है।
21. शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् अनुसूचित जातियों के 94 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया है कि वे सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग किसी–न–किसी रूप में करते हैं जबकि 6 प्रतिशत ने सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग का स्तर बेहद कम बताया है क्योंकि किन्हीं कारणों से उन्हें सार्वजनिक स्थानों के प्रयोग से प्रतिबन्धित किया जाता है।
22. अधिकतम अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राओं ने स्वीकार किया कि उन्हें छात्रवृत्ति समय से नहीं मिल पाती है।

23. अनुसूचित जातियों के छात्रों में 32 प्रतिशत छात्र/छात्राएँ अपनी पारिवारिक आर्थिक स्थिति से संतुष्ट हैं और 68 प्रतिशत अपने परिवार की आर्थिक स्थिति से संतुष्ठ नहीं हैं।
24. शोध हेतु चयनित अनुसूचित जातियों के छात्रों में 32 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को पूर्णतयाः एवं औसत रूप से शैक्षिक सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं जबकि 68 प्रतिशत छात्र/छात्राओं को शैक्षिक सुविधाओं के अभाव का सामना करना पड़ा है, क्योकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है।
25. अनुसूचित जाति के 82 प्रतिशत छात्र/छात्राओं के प्रेरणा श्रोत पारिवारिक व्यक्ति न होकर अन्य व्यक्ति पाये गये।
26. अनुसूचित जाति के 70 प्रतिशत छात्र/छात्राओं के अभिभावक उनसे अधिक अपेक्षायें रखते हैं, जबकि उसके सापेक्ष शैक्षिक सुविधायें उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं हैं, जिसमें उनकी व्यक्तित्व में जटिलतायें उत्पन्न होने लगती हैं।
27. अनुसूचित जाति के 76 प्रतिशत छात्र/छात्राओं नें स्वीकार किया कि उनकी कार्य क्षमता नकारात्मक कारकों से प्रभावित है।

उपरोक्त निष्कर्षों से स्पष्ट है अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राएं अपने जीवन में पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक परिस्थितियां, सामाजिक प्रस्थिति, शैक्षिक व्यवसायिक और भौतिक महत्वकांक्षाओं ने व्यक्तिगत प्रगति को प्रभावित किया जिन छात्रों की परिस्थितियां समृद्ध रही वे अधिक प्रगति कर पाये, और जिनकी परिस्थितियां निम्न स्तरीय रही उनकी व्यक्तिगत प्रगति निम्न स्तरीय रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *चोपरा, एस0 1967, ''दॉ रिलेशनशिप बिटविन सोशियों इकोनोमिमक कारक एण्ड एचीवमेन्टस ऑफ दा स्टूडेन्टस इन सैकण्डरी स्कूल'' पी0एच0डी0 ऐजुकेशन, लखनऊ*
2. *गंगराड़े, के0 डी0, 1979, ''चैलेन्ज एण्ड रेस्पान्सः ए स्टडी ऑफ फेमनीज इन इण्डिया''*
3. *दूबे, एस0 एम0, 1974, ''स्टडी ऑफ शेडयूल कास्ट एण्ड शेडयूट ट्राइब्स कॉजिल स्टूडेन्टस इन आसाम'' पी0 एच0 डी0 थिसिस जोधपुर यूनिर्वसिटी।*
4. *कुमार 1973, ''एन इन्वेस्टीगेसन इन्टू दा केशिस ऑफ लेक ऑफ इनट्रेस्ट इन स्टडीज अमंग स्टूडेन्टस ऑफ क्लास XI'' एम0 एड0 डेजरनेशन्स, सी0 आई0 ई0, दिल्ली यूनिर्वसिटी।*
5. *सिंह, बी0 एन0 के0 1965, ''सम–नोन इनटेक्चुयअल कौरलेशन ऑफ ऐकेडमिक एन्चीवमेन्टस'' इन हमेई के0'' ऐजुकेशनल परफोरमेन्स ऑफ शेडयूल्ड कास्ट'' पी0 एच0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
6. *लोहइतकसमन, 1961, ''एन ऐनेलेटिक एण्ड एक्सपेरिमेन्टल ऑफ बैकवर्डस इन प्राईमरी स्कूल स्टेज'' इन रमेश के0 ऐजुकेशलन ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट्स, ए0 पी0 एच0 पटिब्लेकशन, नई दिल्ली।*
7. *सुब्रमणयम, 1980, ''एन एक्सक्लूसिव स्टडी ऑफ दा सोशल बैकग्राण्ड ऑफ इण्डियाज एडमिनिस्ट्रेटिव'' इन रमेश के0 ऐजुकेशनल ऑफ शेड्यूल कास्ट्स, ए0 पी0 एच0 पब्लिकेसन, नई दिल्ली।*
8. *परम जी, एस0 1985, ''कास्ट्स रिर्जवेशन एण्ड परफोरमन्स'' ममता पब्लिकेशन हनमकोण्ड़ा वारनगल।*
9. *ललितमा, के0 एन0 1980, ''सम फेक्टर अफेक्टिंग एचीवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल प्यूपिल्स इन मैथेमैटिक्स'' पी0 एच0 डी0 ऐजुकेशन, केरला यूनिर्वसिटी।*
10. *कुप्पुस्वामी, बी0 1964, ''एडवान्सड ऐजुकेशनल साइक्लोजी'' दिल्ली यूनिवर्सिटी।*
11. *सुब्रमणयम, 1984, ''दा रिलेटिव इनफल्यूंश ऑफ होम एण्ड स्कूल ओन रीडिंग एचीवमेन्ट ऑफ प्राईमरी स्कूल चिल्ड्रन'' जनरल ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेशन वोल्यूम 21 न0 1*
12. *गुप्ता, एस 0 पी0 1987, ''स्ट्रक्चरल डाइमेंशन ऑफ पावर्टी इन इण्डिया'' मित्तल पब्लिकेशन दिल्ली*
13. *फेयर्सन, 1971, ''डिफरेन्स बिटविन दा गिफ्टड़ चिल्ड्रन ऑफ दा अपर एण्ड लोअर सोशल इकोनोमिक बैकग्राण्ड'' ऐजुकेशनल परफारमेनस ऑफ शेडयूल्ड कास्टस ए0 पी0 एच0 पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
14. *नायर, पी0 के0 बी0 1975, ''दॉ शेडयूल्ड् कास्ट्स एवं ट्राइब्स हाईस्कूल स्टूडेन्टस इन केरला'' केरला यूनिवर्सिटी।*
15. *दास, आर0 1989, ''स्ट्रीट इन रिलेशन टू ऐकेडमिक एचीवमेन्टः ए0 स्टडी ऑफ सैकेण्डरी एण्ड हॉयर सैकेण्डरी क्लास स्टूडैण्डट ऑफ ए स्कूल'' इन दिल्ली एम0 फिल0 डेजरनेशन्स, जे0 एन0 यू0 दिल्ली।*
16. *साह, वी 1961, ''गुजरात कॉलिज स्टूडेन्टस एण्ड कास्टस'' सोशियोलॉजिकल बुलेटिन, वोल्यूम न0 10न01, प0पी0 1–23*
17. *बिन्दू, आर0 पी0 1975, ''प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशन ऑफ शेडयूल्ड कास्टस इन यू0पी0'' आई0 सी0 एस0 एस0 आर0 रिसर्च एब्सट्रैक्ट, वोल्यूम 3 न0 1 जनवरी–मार्च।*
18. *जैन, पी0 ए0 1981, ''स्टडी ऑफ ऐजुकेशनल प्रोब्लम ऑफ शैडयूल्ड ट्राइब्स इन सैकेण्डरी लेवल ऑफ डिस्ट्रिक्ट'' चमोली, एम0 डी0 ड्रेजरनेशन्स गढ़वाल यूनिवर्सिटी।*
19. *कुमारी, निलिमा 1983, ''स्ट्डी ऑफ रिलेशनशिप विटविन सोशियो इकोनोमिक स्टेटस एण्ड कन्सरवेटिव ऑफ नम्बर एण्ड सब्स्टेन्स इन दिल्ली स्कूल चिल्ड्रन'' पी0 एच0 डी0 थिसिस जे0 एम0 आई0 दिल्ली।*
20. *धीर, शिवानी 1988, ''ए स्टडी ऑफ दा बीहेविरीयल प्राबल्मस ऑफ बैकवर्ड चिल्ड्रेन इन स्कूल'' एम0 एड0 ड्रेजरनेशन्स सी0 आई0 ई0 दिल्ली यूनिवर्सिटी।*
21. *भारद्वाज, 1995, ''पर्सनल फैक्टर एमंग हैन्डीकैप्पड एण्ड नॉन हैन्डीकैप्पड़ चिल्ड्रन कम्पेरेटिव स्टडी'' ए जनरल ऑफ डिसऐबीलिटी एण्ड इम्परीमेन्ट्स वोल्यूम 9 (1) पी0 पी0 30–36*

22. *दास, आर0 1989, ''स्ट्रेस इन रिलेशन टू ऐकेडमिक एचीवमेन्टसः ए. स्टडी ऑफ सैकेण्डरी एण्ड हायर सेकेण्डरी क्लास स्टूडेन्ट्स ऑफ स्कूल'' इन दिल्ली, एम0 फिल0 डेजरटेशन्स जे0 एन0 यू0 दिल्ली।*
23. *खान, ए0 एलेन 1990, ''ए कम्पेरेटिव स्ट्डी ऑफ इन्ट्रेस इन साईंस एमंग गर्वनमेन्ट एण्ड पब्लिक स्कूल ऑफ वेस्ट दिल्ली'' एम0 एड0 डेजरटेशन, सी0 आई0 ई0, दिल्ली यूनिवर्सिटी।*
24. *झा, एम0 एल0 1977, ''एजुकेशन एण्ड एबोलशन ऑफ अनटचेबल जनरलस ऑफ हायर एजुकेशन'' वोल्यू 2 न0 3 पी0 पी0 401–406।*
25. *यशपाल सिंह, अग्रवाल 2002, ''आर्थिक विकास और सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका'' रोजगार समाचार दिनांक 19 से 25 जनवरी 2002 खण्ड 26 अंक 42 पृष्ठ 1, 3, 4।*
26. *कुजुम, रमैया 1998, ''एजुकेशनल परफारमेन्स ऑफ शेडयूल्ड कास्टस'' ए0 पी0 एच0 पब्लिकेशन नई दिल्ली।*